नज़्म

चोरां डाकुआं कातलां कोलों की पुछदे हो

पाकिस्तान में लोकपाल जैसा एक संस्थान है जिसे एहतेसाब ब्यूरो कहते हैं। इसके बारे में वामपंथी विचारधारा के पाकिस्तान के विख्यात पत्रकार मुन्नू भाई जो पंजाबी भाषा के कवि भी हैं ने पाकिस्तान के हालात और एहतेसाब ब्यूरो पर एक नज़्म लिखी है उसे उसी भाषा में देवनागरी लिपी में पेश किया जा रहा है। ताकि इसकी मूल भावना न मर जाये।

एहतेसाब दे चीफ़ कमिश्नर, साहब बहादर
चोरां डाकुआं कातलां कोलों,
चोरां डाकुआं कांतलां बारे की पुछदे हो
क्यूं पुछदे हो, ए तुहानू की दसणगे,
क्यूं दसणगे, दसणगे ते,
किंज वसदे ने, किंज वसणगे।
कौन कहे मेरा पुतर डाकू
कतल दा मुजरम मेरा भाई
मेरे चाचे लोकां दी जायदादां ते कब्जे कीते
ते लोकां दी उमर कमाई
लुट के खा गई मेरी ताई।
मेरे फुफड़ टैक्स चुराये,
ते मेरा मामा चोर सिपाही,
दित्ती है कदे किसे ने,
अपने जुर्म दी आप गवाही,
केहड़ा पांदा है अपणे हथ नाल,
अपने गल विच मौत दी फाही,
खोजी रस्सागीर ने सारे
की पुछदे हो
इक दूजे दे जुर्मा बारे इक दूजे नूकी पुछदे हो
डाकुआं कोलों डाकुआं बारे की पुछदे हो।
औखा सप तो मणका मंगणा
शेर दे मुंह चों बोटी खोहणा
हिलां कोलों मास नही मिलदे।
चोरां डाकुआं कातलां कोलों,
मंग्यां कदे सबूत नहीं मिलदे।
फाईलां विच ग्वाचे होये
वडे-वडे करतूत नहीं मिलदे
रल के मारे ते मिल के खादे होये
लोकां दी कब्रां चो
कदे कलबूत नही मिलदे
एहतेसाब दे चीफ कमिश्नरसाब
साडे घर विच डाके वजे
साडिया नीहां पुटियां गईयां
साडे वेहड़े लाशां विच्छियां
साडिया इज़्जतां लुटियां गईयां
असी विचारे ज़ख्मी हथां दे नाल,
इंसाफ़ां दे बूहे खड़कांदे रह गये।
हिलां, कावां, कुतेयां कोलों
अपणे ज़ख्म छुपांदे रह गये
दर्दां कोलों लओ शहादत
जख्मां तो तस्दीक करा लओ
साडे इस मुकदमे विच
सानूं वी ते गवाह बणा लओ
आज़ादी दी पहली फज़ल तो ले के
हुण तक इस धरती ते डुले होये
सारे लहू दी कसम चुका लओ
सच बोलांगे सच खोलांगे
सच दे बाज न कुछ बोलांगे
एहतेसाब दे साब बहादुर...
वैसे तुहानू वी पता ते होणा है,
वी कनालां दी कोठी विच
पंज पजारो चाली कुत्ते पंजी नौकर
दस कनीज़ां कित्थों आईयां
कित्थे लगीयां ऐ टकसालां
देस परायों बणीयां चीज़ां कित्थों आईयां
कित्थों आया चिट्टा पौडर
काली दौलत कित्थों आई
कित्थों आये परमिट,
लीज़ा कित्थों आईयां
एहतेसाब दे चीफ कमिश्नर साब बहादर
अस्सी विचारे बोहड़ा थले
उगण वाली घाह दे तीले
धुप ते मींह नू तरस गये हां
लख करोड़ां दी की गल करिये
दस ते वी नू तरस गये हां
पहले पंजी सालां दे विच
अद्धा मुल्क गवां बैठे हां
छब्बी साल दे मार्शल ला विच
अपणी उम्र हंडा बैठे हां
जिना सानू धोखे दित्ते
उनां कोलों नवियां आसां ला बैठे हां
एहतेसाब दे चीफ़ कमिश्नर साब बहादर
चादर चार दिवारी वाले राज तो पहलां
राती शहर दी गलियां विच
सुख दी चादर ताण के
मिठी नींद्र सौंदे सां
हुण बूहां नू अन्दरों जन्द्रे ला के
अन्दर जागदे रहदें हां
एहते साब दे चीफ़ कमिश्नर साब बहादर

चुनाव लीला की रामलीला रावण सभी, राम कौन ?

पेज एक का शेष

विकल्पहीनता की इस स्थिति में मुकाबला प्रवेश और आनंद के बीच ही रहने की सम्भावना अधिक प्रबल दिखती है। यद्यपि विपुल द्वारा पानी की तरह पैसा बहाया जा रहा है, लेकिन आजकल मतदाता भी इतने सयाने हो गये हैं कि पीते किसी का हैं, खाते किसी का हैं और मत किसी को दान करते हैं।

बडखल सीट से चन्दर भाटिया पिछले डेढ-दो माह से अपने आप को भाजपाई उम्मीदवार के तौर पर प्रस्तुत कर रहे थे। इसके लिये लाखों रुपया प्रचार पर खर्च कर दिया। लेकिन ज्यों ही टिकट सीमा त्रिखा को मिली तो उनके हिसाब से भाजपा में दुनिया भर की बुराइयां यकायक आ गयी। जैसा कि गतांक में सम्भावना व्यक्त कर दी गयी थी कि टिकट न मिलने की सूरत में चन्दर किसी भी टिकट पर या निर्दलीय भी चुनाव लड़ सकते हैं; क्योंकि चुनाव लड़ना इनकी मजबूरी है। इनके व भाइयों के कारोबार ही कुछ ऐसे हैं कि वे राजनीतिक संरक्षण के बिना एक क्षण भी टिक नहीं सकते।

हुआ भी वही। सीमा को टिकट मिलते ही चन्दर तुरंत चौटाला पार्टी में जा घुसे और अब उनको टिकट पर मैदान में हैं। चन्दर यह चुनाव अपनी जीत के लिये नहीं बल्कि सीमा की हार के लिये ज़्यादा लड़ रहे हैं। कांग्रेस टिकट पर खड़े महेन्द्र प्रताप को इससे बड़ी राहत मिली है। यद्यपि यकीन तो नहीं होता, परन्तु चर्चा तो है ही कि इस राहत के बदले महेन्द्र प्रताप ने चन्दर को चुनाव खर्च के लिये अच्छा खासा धन भी उपलब्ध कराया है। हां, यदि चन्दर को भाजपा टिकट मिली होती तो महेन्द्र प्रताप को कतई कोई चिन्ता न रहती, वे लम्बी तान कर सो सकते थे।

एन आई टी सीट से श्रम मंत्री शिवचरण लाल पहले की ही तरह बिना किसी टिकट के (निर्दलीय) चुनाव मैदान में उतर चुके हैं। विदित है कि 2009 के चुनाव में उन्होंने कांग्रेस टिकट न मिलने की वजह से ही मजबूरी में बतौर निर्दलीय चुनाव लड़ा था; परन्तु अब उन्हें निर्दलीय चुनाव लड़ने में ही लाभ नज़र आता है। ऐसे में उन पर पार्टी का कोई बंधन नहीं होगा। वे आसानी से, जो पार्टी सरकार बनायेगी, उसमें शामिल होकर अधिक से अधिक लूट का लाभ कमा सकेंगे।

परन्तु इस बार उनकी राह इतनी आसान नज़र नहीं आती। चौटाला पार्टी के नागेन्द्र भड़ाना से उन्हें कड़ी टक्कर मिलती लग रही है। गत 5 वर्षों में जहां शिवचरण ने जम कर लूट की दुकान चलाई वहीं नागेन्द्र ने लगातार क्षेत्र के निवासियों से सम्पर्क साधे रखा। उन्हें चौटाला पार्टी के नाम से कम और अपने व्यक्तिगत नाम से अधिक वोट मिलने वाले हैं। कांग्रेस के बग्गा व भाजपा के यशबीर डागर की यहां कोई कहानी नज़र नहीं आती।

बल्लबगढ़ सीट से मौजूदा विधायक शारदा की स्थिति अपेक्षाकृत काफ़ी ठीक थी, लेकिन आत्मविश्वास की कमी या फ़िर ज़्यादा चतुर बनने के चक्कर में वे केन्द्रीय गृह मंत्री राज नाथ सिंह व भाजपा अध्यक्ष अमितशाह से मुलाकातें करने लगी थीं। जाहिर है इसका खामियाज़ा भुगतते हुए उन्हें अपनी टिकट से हाथ धोना पड़ा। अपने समर्थन में तथा कांग्रेस पर दबाव डालने के लिये शारदा ने कुछ टूटे-फूटे महिला संगठनों व ठाकुर बिरादरी से बयान दिलवाये, परन्तु बात कुछ बनी नहीं। परिणामस्वरूप यहां से लखन सिंगला को कांग्रेस ने खड़ा कर दिया। सिंगला को जीत-हार से कोई खास मतलब नहीं, क्योंकि हार तो उन्हें निश्चित ही नज़र आ रही है, हां यदि जमानत बच जाये तो बड़ी बात होगी। अपनी दुकानदारी चलाने के लिये सिंगला जैसों के लिये इतना ही काफ़ी है कि उन्हें कांग्रेस ने टिकट दे दिया। इन हालात में भाजपाई मूल चन्द शर्मा को ज़्यादा हाथ-पांव मारने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

तिगांव सीट से 2009 में विधायक निर्वाचित तो कृष्णपाल (अब सांसद व केन्द्रीय मंत्री) जरूर हो गये थे, परन्तु जीते मात्र 621 वोटों से थे। इसके चलते नम्बर दो पर रहे कांग्रेसी ललित नागर के हौंसले इस बार काफ़ी बुलंद हैं। राबर्ट वाड्रा के एजेंट समझे जाने वाले ललित नागर को इस बार भी कांग्रेस ने अपना प्रत्याशी घोषित कर दिया है; जबकि भाजपा में टिकट के लिये भयंकर घमासान मचा। वैसे तो कृष्णपाल यहां से अपने बेटे को खड़ा करना चाहते थे, परन्तु मजबूरी में राजेश नागर को टिकट दिलाना पड़ा। राजेश नागर उसी रूप सिंह नागर का पुत्र है जिस पर पिछले दिनों महेन्द्र फ़ौज़ी व उसके भाई नरेन्द्र की हत्या का आरोप लगा था। दोनों बाप बेटे कल तक कांग्रेस का ही झंडा उठाये हुए थे जो यकायक भाजपा में आ गये। ये लोग भाजपा में इस उम्मीद से आये हैं कि इन लोगों का धंधा बिना सरकारी संरक्षण के चल ही नहीं सकता। इन हालात ने ललित नागर की स्थिति को यहां काफ़ी मज़बूत बना रखा है।

पृथला सीट से कांग्रेसी उम्मीदवार रघुबीर तेवतिया पिछली बार यहां से जीतने के बाद काफ़ी ऊंचा उडने लगे थे। विकास के नाम पर उन्होंने जो अंधा-धुंध लूट मचाई किसी घोटाले से कम नहीं। मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह बार-बार यहां आकर गिनाते रहे कि क्षेत्र के विकास हेतु उनकी सरकार ने यहां कितने करोड़ खर्च कर दिये, परन्तु यह जानने का कभी प्रयास नहीं किया कि वह रुपया जा कहां रहा है? लेकिन क्षेत्र की जनता बखूबी जानती है कि किस प्रकार से विधायक रघुबीरा के प्यादों को ठेके देकर सारा धन लुटा दिया गया था। क्षेत्र के युवाओं को नौकरी दिलाने में भी इन्होंने चोखी दुकानदारी चलाई थी। इन हालात को देखते हुए मुकाबला चौटाला पार्टी के राजेन्द्र बिसला व भाजपा के नयनपाल रावत के बीच ही बनता दिख रहा है।

युवा रावत को जहां गत 5 वर्षों में इस क्षेत्र में की गयी अपनी मेहनत पर विश्वास है वहीं बुजुर्ग बिसला को अपने पुराने अनुभवों तथा सम्पर्कों पर भरोसा है। बिसला बल्लबगढ से 4 बार विधायक रह चुके हैं, कभी निर्दलीय तो कभी कांग्रेसी टिकट पर।

पलवल ज़िलों की तीन सीटों में से कांग्रेस को एक भी मिलती नज़र नहीं आ रही। ज़िले के सबसे बड़े कांग्रेसी चेहरे कर्ण दलाल ने मुख्यमंत्री से रिश्तेदारी के चलते, विधायक न होते हुए भी गत 5 वर्षों में जिस तरह से सत्ता का दुरूपयोग किया है, उसे मतदाता भूलने वाले नहीं। ज़िले भर के तमाम थानों में किसके विरुद्ध एफ़ आई आर दर्ज होगी, किसको पकड़ना या छोड़ना है, यह सब कर्ण दलाल एवं इनके परिजन तथा प्यादे ही तय करते रहे हैं। किस क्षेत्र में जुआ, सट्टा, शराब आदि का धंधा कौन चलायेगा, यह सब भी इन्हीं के यहां से तय होता रहा है। ज़िले में किसी भी विभाग के किसी भी अधिकारी/कर्मचारी की तैनाती इनकी मर्जी के बिना नहीं हो सकती। लिहाज़ा इन विभागों से सम्बन्धित जनता की तमाम शिकायतों का ठीकरा इनके सिर फूटना तय है।

भाजपा तथा चौटाला ने हुड्डा को ज़िंदा किया

पेज एक का शेष

चौटाला की जीत में अब तक काफ़ी योगदान बादल के अकाली दल का भी रहा है। इनका हरियाणा के सिख मतदाताओं पर अच्छा-खासा प्रभाव माना जाता रहा है। परन्तु हुड्डा द्वारा हरियाणा के सिखों के लिये अलग गुरूद्वारे प्रबन्धक कमेटी बना दिये जाने से पंजाब का अकाली दल (बादल) व हरियाणा के सिख आमने-सामने खड़े हो गये हैं। हो भी क्यों न? मामला बड़ी लूट का जो ठहरा। हरियाणा भर में 72 गुरूद्वारों की वार्षिक कमाई 350 करोड़ है जिसमें से मात्र 30 करोड़ हरियाणा के हिस्से तथा शेष सारी बादल गिरोह के पास जाती रही है। गुरूद्वारों के फ़ंड से चलने वाली तमाम बड़ी संस्थायें पंजाब में ही हैं। इसके अलावा हरियाणा के गुरूद्वारों की अरबों रुपये की अचल सम्पत्ति भी अब बादल से मुक्त हो गयी है।

बादल बेशक चौटाला के समर्थन में प्रचार करते घूम रहे हैं, लेकिन प्रचार में अब कोई दम बचा नहीं है। चौटाला की मुसीबत यह है कि न तो बादल के हक में बोलने की स्थिति में है और न ही हरियाणा गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के हक में। विदित है कि राज्य में सिखों की आबादी 7 प्रतिशत है और 25 विधानसभा सीटों की चाबी इनके हाथ में है। इन 25 सीटों के अलावा अविभाजित रोहतक ज़िले की 14 सीटों पर तो हुड्डा की पकड़ पहले से ही है। पकड़ हो भी क्यों न कांग्रेस के शेष नेता इसी बात को तो रोते रहे हैं कि इस रोहतक के अलावा बाकी भी हरियाणा है। सारी नौकरियां व सारा विकास रोहतक में ही तो हो रहा है। भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के काल में चाहे कितनी ही लूट-मार रही हो कितना ही कुशासन रहा हो, लेकिन चौटाला सरीखी क्रूरता की कोई चर्चा सुनने में नहीं आई। सच्चाई चाहे कुछ भी रही हो परन्तु चौटाला राज में चर्चा आम रहती थी कि इनके यहां डेंटिंग-पेंटिंग की वर्कशॉप है जहां अच्छे खासे लोगों को ठोक-पीट कर उनके डेंट निकाल कर बढिया पेंटिंग कर दी जाती है।

चौटाला लाख दहाड़े मारें कि वे तिहाड़ जेल में ही गवर्नर को बुला कर शपथ ग्रहण करेंगे। लेकिन यह किसी तरह भी संभव नहीं। जेल जाने के समय तो शपथ ली लिवाई जयललिथा की ही शपथ उतर गयी और इस्तीफ़ा देना पड़ा और अब अपने उत्तराधिकारी का चयन करना पड़ा। तो फ़िर पहले से ही सज़ायाफ़्ता को कैसे कोई शपथ दिला देगा? उत्तराधिकारी के नाम पर आज चौटाला पार्टी में अभय मुंह धोये बैठे हैं जबकि चौटाला उन्हें कभी मुख्यमंत्री बनाकर राज़ी नहीं। जाहिर है इसे लेकर भी चौटाला परिवार में घमासान होना तय है। पर इसकी नौबत इसलिये नहीं आयेगी कि इनकी सीटे पिछली बार से भी कम ही आने वाली हैं।

हां इन हालात में कांग्रेस की सीटें पिछली बार के आसपास आ सकती हैं, लेकिन केन्द्र में भाजपा की सरकार होने के नाते गवर्नर भाजपा व चौटाला को जोड़-तोड़ का पूरा मौका देकर इनकी सरकार बनाने का प्रयास करेगा। जेल और मुकदमों के दबाव के चलते केन्द्र सरकार चौटाला पर भारी पड़ेगी। इसका पूरा-पूरा लाभ भाजपा उठाने का प्रयास करेगी। जेल में होते हुए भी चौटाला को जो चुनाव प्रचार करने की छूट मिली है वह भी भाजपा सरकार की इसी योजना के तहत है।

TO-LET
2100 Sq.Ft. HALL (30X70)
GROUND FLOOR,
NIT-3, (E & F Div. Road) FBD.
On Main Sainik Colony 60 Ft. Road
Cont.: 09459234751

AVAILABLE ON RENT/LEASE
600 Sq.Ft. (approx.)
Office Unit, Excellent Location,
Opp. TCS Maruti, 45, Neelam Flyover,
Cont.: 9811199260

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्क करें।